>

Title: Need to formulate a policy to reduce global warming.

श्रीमती दर्शना जरदोश (सूरत): मौसम परिवर्तन एवं वैश्विक गर्मी आज पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। इस समस्या के समाधान के लिए देश में हो रहे प्रयासों को और तेज करने की आवश्यकता है। अगर जल्द ही इस हेतु ठोस योजना बनाकर उसके क्रियान्वयन पर ध्यान नहीं दिया गया तो हमारा भविष्य खतरे में होगा।

इस समय अमरनाथ यात्रा चल रही है। विशेषज्ञों का कहना है कि पिछले 125 वर्षों का घाटी का तापमान एवं ठंड का जायजा लिया जाए तो तापमान में हर साल बढ़ोतरी होती जा रही है और ठंड में कमी दिखाई दे रही है। अमरनाथ यात्रा का शिवलिंग हिन्दुओं का श्रद्धा केन्द्र है जो शिवलिंग आमतौर पर अगस्त तक वैसा का वैसा रहता था एवं इस बार 16 फीट का शिवलिंग बना था वो अगस्त के शुरू होने से पहले पिघल गया है। गंगोत्री यमनोत्री एवं हिमालय के बर्फ की पिघलने की मात्रा बढ़ती जा रही है। यहां तक कि रोहतांग पास जहां लोग घूमने एवं खासतौर पर बर्फ देखने पूरे देश से जाते हैं वहां भी अगस्त की शुरूआत से पहले ही बर्फ पिघल रही है।

देश का मौसम अगर देखा जाये तो बारिश के आंकड़ों में जो उतार-चढ़ाव है उसी से यह समस्या किस तरह से हमें चैलेंज कर रही है, यह पता चलता है। अगर पिछले कुछ वर्षों में देश में अलग-अलग जगह पर आयी बाढ़ के आंकड़ों पर गौर किया जाए, तो पता चलेगा कि किस तरह से और कितने समय में कितना पानी बारिश के माध्यम से अपनी जमीन पर आ रहा है। देश के कई भाग ऐसे हैं जहां पर साल भर में जितनी बारिश होती थी वो एक सप्ताह या कई बार एक दिन में हो जाती है। सूखा प्रदेश या गुजरात का सौराष्ट्र जैसा प्रदेश, जहां साल की बारिश आज से 10 या 20 साल पहले 15 से 25 इंच के बीच में होती थी आज मौसम की शुरूआती समय में ही बारिश रही है। कई बार आधी से ज्यादा बारिश एक दिन या एक सप्ताह में ही हो जाती है।

यह समस्या अपनी सुरक्षा से भी जुड़ी हुई है। अगर बर्फ पिघलती है तो यह सीमा पार से घुसपैठियों को भी फायदा पहुंचा सकती है।

मेरा केन्द्र सरकार से निवेदन है कि वह कोई ठोस योजना बनाकर मौसम परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग को कम करने हेतु उस पर शीघ्र कार्य करे। हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा इस दिशा में किए गए कार्यें को सारे देश में चलाया जाए।